पीडियाट्रिक एंडोक्रिनोलॉजी तथ्य चार्ट
लड़कियों के यौवन में विलंब: परिवारों के लिए मार्गदर्शक जानकारी

लड़कियों के यौवन (प्यूबर्टी) में विलंब की परिभाषा क्या है?

जब पिट्यूटरी ग्रंथि (ग्लैंड) दो प्रकार के हार्मोन, लुटिनाइजिंग हार्मोन (LH) और फॉलिकल स्टिम्युलेटिंग हार्मोन (FSH) बनाना प्रारंभ करती है, तब यौवन की शुरुआत होती है। यह दो हार्मोन अंडाशय (ovary) का आकार बढ़ाने और एस्ट्रोजन के उत्पादन में मदद करते हैं। स्तन का आकार बढ़ने लगता है और लम्बाई में बढ़ोतरी देखी जाती है। लगभग 2-3 साल बाद माहवारी शुरू होती है। यदि किसी लड़की में स्तन का विकास 13 साल की उम्र तक न देखा जाए, तो इस अवस्था को 'यौवन में विलंब' माना जाता है।

लड़कियों के यौवन में विलंब किन कारणों से होता है?

कुछ लड़कियों में यौवन पैदाइशी देरी से शुरू होता है। इन लड़कियों में यौवन शुरू होने के बाद सामान्य गति से सभी बदलाव देखे जाते हैं। इस अवस्था को 'संवैधानिक यौवन विलंब' कहा जाता है। यह अकसर माता या पिता से विरासत में मिलता है। यदि माँ को माहवारी 14 साल की उम्र के बाद शुरू हुई हो या पिता के यौवन प्रारंभ होने में विलंब रहा हो, तो बेटी में भी यौवन देर से प्रारंभ होने की संभावना होती है।

शरीर में चर्बी की कमी होना विलंबित यौवन का सबसे प्रमुख कारण है। जो लड़कियां काफी पुष्ट होती हैं और कसरत, प्रतियोगी नाच एवं प्रतियोगी तैराकी में भाग लेती हैं, उनमें भी यह अवस्था देखी जाती है। खाने का अत्यधिक परहेज करना और वजन बढ़ने का डर रहने से यौवन में विलंब हो सकता है। इस अवस्था को एनोरेक्सिया नर्वोसा कहते हैं (anorexia nervosa). कुछ लम्बी बीमारियों के होने के कारण शरीर में चर्बी की कमी हो सकती है।

कुछ लड़कियों के अंडाशय में भी समस्या हो सकती है। यदि अंडाशय को किसी कारण क्षति पहुंची हो या पूर्ण रुप से उसका विकास न हुआ हो, तो इस अवस्था को 'प्राथमिक अंडाशयी अपर्याप्तता' (प्राइमरी ओवेरियन इंस्फिसिएनसी) कहते हैं। इसका प्रमुख कारण टर्नर सिंड्रोम है। टर्नर सिंड्रोम से प्रभावित लड़कियों का कद उनकी उम्र के हिसाब से काफ़ी कम होता है। उनके शरीर में अन्य चिन्ह जैसे कि झिल्लीदार गर्दन, ऊंचा तालु, और कोहनी का बाहर की ओर मुड़ना देखे जाते हैं।

अंडाशय को क्षति विकिरण इलाज (रेडिएशन) से भी हो सकती है। कुछ लड़कियों में पिट्यूटरी हार्मोन (LH और FSH) की कमी होती है।

लड़कियों के यौवन में विलंब का डायगनोसिस कैसे होता है?

खून की जांच द्वारा इस अवस्था का डायगनोसिस बनाया जा सकता है। पीडियाट्रिक एंडोक्रिनोलोजिस्ट खून में कई हार्मोन (LH, FSH और एस्ट्रोजन) की जांच करवाते हैं। यदि अंडाशय उचित रूप से काम नहीं कर रहे हैं, तो LH और FSH के स्तर काफ़ी बढ़ जाते हैं। कुछ लड़कियों में क्रोमोसोम (chromosome) की जांच भी करवानी पड़ सकती है।

शरीर में चर्बी की कमी या पिट्यूटरी ग्रंथि में कोई समस्या होने की वजह से LH और FSH के स्तर कम हो जाते हैं। दिमाग के एम-आर-आई (MRI) और हाथ के एक्सरे (x-ray) से और जानकारी मिल सकती है।

लड़कियों के यौवन में विलंब का इलाज कैसे होता है?

संवैधानिक यौवन विलंब के इलाज की ज़रूरत नहीं होती। इसमें स्तन का विकास स्वयं ही प्रारंभ हो जाता है।

4 से 6 महीने एस्ट्रोजन हार्मोन देने से विकास थोड़ा जल्दी शुरू किया जा सकता है। जिन लड़कियों के शरीर में चर्बी की कमी है, उनमें खुराक और वजन बढ़ाने से यौवन की शुरुआत होने में मदद मिलती है।

प्राथमिक अंडाशयी अपर्याप्तता में लम्बे समय के लिए एस्ट्रोजन हार्मोन लेना पड़ता है। एस्ट्रोजन हार्मोन गोली या पैच (patch) के रूप में उपलब्ध है। पैच को त्वचा पर हफ्ते में दो बार लगाना होता है। एस्ट्रोजन हार्मोन की खुराक धीरे-धीरे बढ़ाई जाती है। एस्ट्रोजन शुरू करने के 12 से 18 महीने के बाद एक दूसरा हार्मोन, प्रोजेस्टरोन (progesterone) शुरू किया जाता है. इस प्रक्रिया से माहवारी शुरू होती है। अपने एंडोक्रिनोलोजिस्ट से इस विषय में अन्य जानकारी लें।

यह जानकारी पीडियाट्रिक एंडोक्राइन सोसाइटी के मरीज शिक्षा अनुभाग की सहायता से छपी है।

PES PEDIATRIC ENDOCRINE SOCIETY